सुगम सर्व शान्ति रहस्यम्

प्रधान सम्पादक
पं. अजय कुमार शास्त्री
एम. ए. (संस्कृत, हिन्दी), साहित्य सुधाकर

सह-सम्पादक
पं. सुशील कुमार झा

परामर्शक
पं. कैलाश मिश्र

सुगम सर्व शान्ति रहस्यम्

प्रधान सम्पादक
पं. अजय कुमार शास्त्री
एम.ए. (संस्कृत, हिन्दी), साहित्य सुधाकर
सह-सम्पादक
पं. सुशील कुमार झा
परामर्शक
पं. कैलाश मिश्र

प्रकाशक :
अजय कुमार शास्त्री
ग्राम- जमशेर चठियाल, गढ़दीवाला
होशियारपुर (पंजाब) १४४२०७
सम्पर्क समत्र ९८१५६-२८८४७

प्रथम संस्करण	:	वसंत पञ्चमी, विसं २०७५ (१० फरवरी, २०१९)
टंकण	:	योगेश चौबे एवं रश्मि चौबे
प्रतियाँ	:	१०००
मूल्य	:	५० रुपये मात्र

मुद्रक : साईं आर्ट एण्ड प्रिंट, न्यू पृथ्वी नगर, होशियारपुर रोड, जालन्धर

-समर्पण-

अपने भक्तिमय संकीर्तन और प्रवचन द्वारा जन-जन के हृदय को अह्लादित करने वाला लोकप्रिय, समाजसेवी पूज्यपाद पिताजी स्व. शिवचन्द्र ठाकुर जी जिन की स्मृति ही अब शेष बची है। उन्हीं पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय पिता जी के पावन स्मृति में यह 'सुगम सर्व शान्ति रहस्यम्' नामक पुस्तक सादर समर्पित है।

पं. अजय कुमार शास्त्री

सनातन, धर्म का मूल वेद है। वेद के एक लाख मन्त्र हैं। जिसमें अस्सी हजार मन्त्रों का केवल कर्मकाण्ड में ही प्रयोग होता है। इसलिए कर्मकाण्ड एक व्यापक और विशाल महासागर सा प्रतीत होता है। इस कर्मकाण्डरूपी महासागर में अनेकों विद्वानों ने गोता लगाया, परन्तु हमें कर्मकाण्ड के विषय में जो भी मार्गदर्शन मिला, अपने पूज्य गुरुजी से मिला। आज मन में प्रसन्नता है कि अपने गुरुजी पं. अजय कुमार शास्त्री जी के साथ मिलकर इस छोटी सी **'सुगम सर्व शान्ति रहस्यम्'** नामक पुस्तक के लेखन कार्य में कुछ सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ। मुझे आशा है कि पूज्य गुरुजी द्वारा सम्पादित यह पुस्तक विद्वानों की कसौटी पर सही उतरेगी। इस पुस्तक को कई विद्वानों का शुभाशीष भी प्राप्त हुआ है फिर भी अगर कोई त्रुटि रह जाए तो विद्वत् वर्ग से सविनय निवेदन है कि हमें क्षमा कर उचित मार्गदर्शन करें। ताकि अगले संस्करण में इसका सुधार हो सके-

कृतज्ञ शिष्य

पं. सुशील कुमार झा

आशीष-

विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्म विष्णुः महेश्वरान्

सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्व कामार्थ सिद्धये

ॐ स्वस्तिः समस्त मङ्गलानि भवन्तुः।

श्रीयुत अजय शास्त्री जी द्वारा संकलित यह पुस्तक गागर में सागर के समान है। यद्यपि कर्मकाण्ड विस्तृत, विधि निषेध आदि व्यवस्थाओं से युक्त है तथापि मन्त्रों के बिना और सम्यग् विधि विधान के बिना कोई भी कार्य विशेषकर सनातन धर्मावलम्बी गृहस्थों के यहां तो संभव ही नहीं। श्री प. अजय शास्त्री जी सनातन धर्म के पोषण; तोषण एवं संवर्धन हेतु समर्पित धर्मप्रण किए हैं। उनकी यह ज्ञान सरिता समस्त भूमण्डल के विद्वानों को तृप्त करे, आनन्दित करे यह शुभकामना रखता हूँ और आशा करता हूँ कि शास्त्री जी भविष्य में भी ऐसे प्रकरण सधर्मानुसंधान के द्वारा लोकोद्धार रखते रहें। ऐसा मेरा आशीष है। यतो धर्मस्ततो जयः।

उदय नारायण शास्त्री

पं. अजय कुमार शास्त्री द्वारा सम्पादित **'सुगम सर्व शान्ति रहस्यम्'** नामक पुस्तक मैंने आद्योपान्त देखा है। इस पुस्तक में गण्डमूल शान्ति, त्रिक शान्ति आदि विषयों को बड़ा सुन्दर और व्यवस्थित तरीके से रखा गया है। जो कर्मकाण्डी विद्वानों के लिए परमोपयोगी सिद्ध होगा। इस प्रशंसनीय प्रयास के लिए मैं शुभाशीष प्रदान करता हूँ कि इस तरह लोक कल्याण के लिए सतत प्रयास करते रहें।

पं. कैलाश मिश्र

दो शब्द...

कर्मकाण्ड तो महासागर है। जिसका सांगोपांगो वर्णन करना अतिदुरुह और असम्भव सा प्रतीत होता है। फिर भी विद्वत् वर्ग के आशीर्वाद से इस 'सुगम सर्व शान्ति रहस्यम्' नामक पुस्तक का संग्रह करने का प्रयास किया है। कर्मकाण्ड की कई पुस्तकों अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस से मैंने अनुभव किया कि क्यों न एक ही पुस्तक में गण्डमूल, त्रिक, वैधृति आदि शान्ति विषयों को एकत्रित किया जाए। इस भावना को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक में सम्पूर्ण विषयों को समाहित करने का प्रयास किया है। आशा करता हूँ कि इससे कर्मकाण्डी विद्वान् आवश्य लाभान्वित होंगे। इस पुस्तक के निर्माण में जिन-जिन विद्वानों की पुस्तकों से मैंने सहयोग प्राप्त किया है, उन विद्वानों को मैं हृदय से आभारी हूँ।

इस पुस्तक की शुद्धता का पूर्ण प्रयास किया तथापि कोई न कोई त्रुटि रह जाए तो विद्ववत् वर्ग से विनम्र निवेदन है कि मुझे सुझाव आवश्य प्रदान करें। ताकि अगले संस्करण में इनका सुधार किया जाए।

विद्ववत् चञ्चरीक

पं. अजय कुमार शास्त्री

पं. सुशील कुमार झा

विषय सूची

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

मूलानक्षत्रेजननजातकस्य गण्डान्त शान्ति दिने बालक पत्नी सहितो यजमानः शुकलाम्बरो धौत वस्त्रं वा परिधाय (शुद्धाशनोपरि) भद्रासनोपरि प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य आसनशुद्धिं तीर्थं आवाहनादिकं कृत्वा स्वस्तिवाचन गणेशादि पूजनं कुर्यात्। सर्वपूजनं अधोलिखित विधिना कर्तव्यम्॥

तीर्थ आवाहन (गंगा पूजनम्)

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥
विष्णुपादाब्ज सम्भूते गंगा त्रिपथ गामिनी।
धर्मद्रवीति विख्याते पापं मे हर जाह्नवि॥
ॐ भागीरथीगंगादेव्यै नमः। इत्यनेन पाद्यदिभिः सम्पूजयेत्।

आत्मशुद्धिः

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचि॥
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु॥ ३॥

आचमनम्

ॐ केशवाय नमः॥ १॥ ॐ नारायणाय नमः॥ २॥ ॐ माधवाय नमः॥ ३॥ इत्यनेनाचमेत् ॐ हृषीकेशाय नमः हस्तप्रक्षालनम्॥

पवित्री धारणम्

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

कंकण बन्धनम्

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणया श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥ १॥
येन बद्धो बलीराजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे माचल माचल॥ २॥

तिलक धारणम्

ॐ आदित्यावसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
तिलकन्ते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये॥ १॥
चन्दनं वन्दते नित्यं पवित्रं पाप नाशनम्।
आपदां हरते नित्य लक्ष्मी तिष्ठति सर्वदा॥ २॥

पृथ्वी पूजनम्

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलंछन्दः कूर्मो देवता आसन पवित्रकरणे विनियोगः।

ॐ आधार शक्तये नमः दिव्यासनाय नमः इति गन्धादिभिः सम्पुज्यानेन प्रार्थयेत्-

ॐ पृथ्वि त्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वञ्च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

ततः गोरेसर्षपान् वाम हस्ते गृहीत्वा दक्षिणेन हस्तेन

सम्पुटितमधोलिखित मन्त्रं (पठनान्तरं पठित्वा) पूर्वादिदिक्षुषु विकिरेत्।

भूतोत्सारण मन्त्राः

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुमि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥ १॥
अपक्रमन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन यज्ञकर्म समारभे॥ २॥

ॐ प्राच्यै नमः॥ १॥ ॐ अवाच्यै नमः॥ २॥ ॐ प्रतीच्यै नमः॥ ३॥ ॐ उदीच्यै नमः॥ ४॥ ॐ अन्तरिक्षाय नमः॥ ५॥ ॐ पृथ्व्यै नमः॥ ६॥

पुष्पाक्षतादिमादय- स्वस्ति वाचनम्

हरिः ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवता ऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव॥ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मती। यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामेऽस्मिन्ननातुरम्॥ एतं ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ संमिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो३ प्रतिष्ठ॥ एष वै प्रतिष्ठानाम यज्ञो यत्रै तेन यज्ञेन यजन्ते सर्वं मेव प्रतिष्ठितं भवति॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसोमम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्॥

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः॥

ॐ सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥ १॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानिं नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥ २॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥ ३॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नबदनंध्यायेत्सर्व विघ्नोपशान्तये॥ ४॥
अभीप्सितार्थं सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥ ५॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।

शरण्येत्र्यम्बकेगौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥ ६॥

वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ।
निर्विघ्नंकुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥ ७॥

पुष्पाक्षतादि गणेशाम्बिकयोः समर्पयेत्। पुनः वामहस्ते पुष्पादि गृहीत्वा अधोलिखित मन्त्रेण पृथक-२ अर्पयेत्।

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ॐ श्री गुरवे नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्योदेवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ मातृ पितृ चरण कमलेभ्यो नमः। ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्री मन्महागणाधिपतये नमः॥

ॐ तत्सत् विष्णुः -३ ॐ अद्यब्रह्मणोऽहनि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्ते वर्तमानकलियुगे कलिप्रथमे चरणे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक योगे अमुक करणे अमुकामुक राशीसु स्थितेषु सत्सु ग्रहसु ग्रहगुणगण विशिष्ट विशिष्टायां श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलप्रासिकामः पुरुषार्थ चतुष्ट्यप्राप्तये मनोभिलाषित फल प्रासये (गन्डन्तश्चेत् अमुक नक्षत्रे अमुक पादे जनन तत् पित्रादि सम्बन्धि अरिष्ट दोष निर्वानार्थ) अमुक कर्माहं करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतया सर्वकर्म परिसमाप्तिहेतवे गणेशाम्बिकादि पूजन कर्माहं करिष्ये॥

अथ गणेश-अम्बिका पूजनम्

ॐ गणानां त्वा गणपतिः हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिः हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिः हवामहे वसोमम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्॥ ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मानयति कश्चन ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पोल वासिनीम् इत्यावाह्य 'ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः' षोडशेपचारेण पूजयेत्॥

ततः पुष्पांजलि-ॐ वक्रतुण्ड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभ।
अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥ १॥
ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियता प्रणता स्मताम्॥ २॥
ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पांजलि समर्पयामि॥

अथ ॐ कार पुजनम्

ॐ आवाह्याम्यहं देवमोंकारं परमेश्वरम्।
त्रिमात्रं त्र्यक्षरं दिव्यं त्रिपदं च त्रिदैवकम्॥
त्र्यक्षरं त्रिगुणाकारं सर्वाक्षरमयं शुभम्।
त्र्यणवं प्रणवं हंसं स्त्रष्टारं परमेश्वरम्॥
इत्यावाह्य ॐकाराय नमः इत्यनेन सम्पुज्य
ॐ ओकारं विन्दुसंयुक्त क्नतयँ ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव श्री ओंकाराय नमः॥ १॥ पुष्पांजलि दद्यात्।

षोडशमातृका पूजनम्

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मानयति कश्चन।
ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पोल वासिनीम्॥ इत्यावाह्य

ॐ गौर्यादिषोडशमातृभ्यो नमः इत्यनेन

सम्पूज्य पुष्पांजलिदद्यादनेन मन्त्रेण-

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जय।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरोलोकमातरः ॥ १ ॥
दृष्टि पुष्टिस्तथा तुष्टिः तथात्मकुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता बृद्धौ पूज्याश्च षोडशः ॥ २ ॥
'ॐ गौर्यादिषोडशमातृभ्यो नमः' पुष्पांजलि दद्यात्॥

कलशस्थापनम्

पीठस्येशानभागे शुद्धभूम्यां अष्टदलपद्म बिरच्य तस्येपरि कुम्भस्थापन विधिना कलशं स्थापयेत्-

कलशाधार भूमिमुत्तान हस्ताभ्याम् स्पृष्टवा- ॐ भूरसि भूमिरसि अदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भूवनस्य धर्त्रीं। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ँ ह पृथिवीं मा हि ँ सीः॥ इत्यावाह्य ॐ आधारशक्तये नमः इति पंचोपचारेण पूजयेत्।

आधारभूमिं स्पर्शय प्रार्थयेत्- ॐ मही द्यौः पृथिवीं च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नोमरीमभिः। इति नमस्कुर्यात्॥

सप्तधान्य बिकिरेत्- ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वो दानायत्वा व्यानायत्वा। दीर्घा मनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृम्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि॥

सलक्षणं धातुमयं मृणमयं वा कलशं अष्टदलोपरि स्थापयेत्- ॐ आ जिध्र कलशं मह्यात्वा विशन्त्विन्दव। पुनरुर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः॥

कलशे जलं क्षिपेद्- ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनोस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद्॥

कलशे गन्धं क्षिपेद्- ॐ त्वां गन्धर्वा अरवनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत॥

सर्वौषधी क्षिपेदनेन- ॐ या ओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यः त्रियुगं पुरा। मनै नु ब भ्रूणामह ँ शतं धामानि सप्त च॥

दूर्वांकुराणि दद्यादनेन- ॐ काण्डात्काण्डात्परोहन्ति परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्बे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥

कुश निर्मित पवित्रं प्रक्षेपः - ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाभ्याच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्यते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्॥

सप्तमृत्तिका - ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥

कलशे पुगीफलं क्षिपेद् - ॐ या फलानीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व ँ हसः॥

पञ्चरत्नदद्यादनेन- ॐ परिबाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधत् रत्नानिदाशुषो॥

दक्षिणां प्रक्षिपेद् - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवी द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम्॥

पञ्चपल्लवं दद्यादनेन- ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता। गोभाज इत्किलासथ सत्सनवथ पूरुषम्॥

रक्तवस्त्रं कण्ठे वेष्टयेत्- ॐ युवा सुवासाः परिवीत् आगात् स उश्रेयान् भवति जायमानः। तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा

देवयन्तः ॥

कलशेपरि पूर्णपात्रं स्थापयेत्- ॐ पूर्णादविं परापत सुपूर्णा पुनरापत। बस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ं शतक्रतो॥

रक्तवस्त्रवेष्टित् नारिकेलफलं यजमान सम्मुखं पूर्णपात्रोपरि न्यसेत्- ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्भ इषाण सर्व लोकम्म इषाण॥

ततः कलशे वरुणमवाह्यपूजयेत्- ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। इहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ं स मा न आयुः प्रमोषीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अस्मिन् कलशे वरुणां सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि॥ ॐ अपां पतये वरुणाय नमः पाद्यादिभिः अर्चयेत्।

कलशं अनामिकया स्पृष्टं अभिमन्त्येत्

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठेरुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृता॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षय कारकाः॥
ॐ मनोजूति इत्यनेन प्रतिष्ठाप्य

ॐ गायत्र्यादि सर्वेभ्यसो देवेभ्यो नमः इत्यनेन पंचोपचारेण अर्चयेत्।

कलशं प्रार्थयेत्

ॐ देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नौऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुनास्वयम्॥
त्त्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिता
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणा प्रतिष्ठिता॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्राः विश्वेदेवा सपैतृका॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फलप्रदाः॥
त्वत्प्रसादादिमं कर्म कर्तुमिह जलोद् भव।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥
नमो नमस्तेस्फटिक प्रमाय सुश्वेतहाराय सुमंगलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥

ॐ कलशे आवाहिताः वरुणाद्याः देवताभ्यो नमः पुष्पांजलि समर्पयामि।

वास्तुपूजनम्

ॐ नमोऽस्तु सर्वेभ्यो ये के च पृथ्वीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्वेभ्यो नमः।

ॐ वासुक्याद्यष्ट कुलनागेभ्यो नमः इत्यनेन आवाह्य लब्धोपचारेण सम्पूज्य पुष्पमदाय प्रार्थयेत्।

ॐ अथातः सम्प्रवक्ष्यामि यदुक्तं वास्तुपूजनम्।
येन पूजां विधानेन कर्म सिद्धिस्तु जायते॥
अनन्तं पुण्डरीकाक्षं फणाशतविभूषितम्।
विद्युद् बन्धूकसाकारं कूर्मारुढं प्र पूजयेत्॥

इति पुष्पांजलि दद्यात्॥

योगिनी पूजनम्

ॐ योगे योगेतवस्तरं वाजे वाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूर्तये॥

ॐ दिव्यादि चतुष्षष्ठी योगिनीभ्यो नमः आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि। पाद्यादिभिः अर्चयेत्।

प्रार्थनापूर्वक पुष्पांजकलि

ॐ आवाह्याम्यहं देवीं योगिनीं परमेश्वरीम्।

योगाभ्यासेन संतुष्टा परध्यान समन्विताः॥

दिव्यकुण्डल संकाशा दिव्य ज्वाला त्रिलोचना।

मूर्तिमतीह्यमूर्ता च उग्रा चैवोग्ररुपिणी॥

अनेकभावसंयुक्ता संसारार्णवतारिणी।

यज्ञं कुर्वन्तु निर्विघ्नं श्रेयो यच्छन्तु मातरः॥

इति पुष्पांजलि दद्यात्॥

अथ लक्ष्मीपूजनम्

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्भ इषाण सर्व लोकम्म इषाण। इति लक्ष्मीम्।

अथ ब्रह्मा पूजनम्

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो वेन आवः सुबुध्न्या उपमाऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः। इति पाद्यादिभिरर्चयेत्॥

अथ विष्णु पूजनम्

ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥

ॐ विष्णवे नमः इति पाद्याभिसर्चयेत्॥

अथ शिव पूजनम्

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः॥

ॐ शिवाय नमः आवाह्यामि स्थापयामि। इत्यनेन पूजयेत्॥

अथ नवग्रह पूजनम्

सूर्यपूजनम्- ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च॥ हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। ॐ सूर्याय नमः।

चन्द्रमापूजनम्- ॐ इमन्देवाऽअसपत्नः सुबध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यापेन्डस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्ये विशऽएष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां ः राजा। ॐ राजा॥ ॐ सोमाय नमः॥ इत्यनेन पूजयेत्॥

भौम पूजनम्- ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ः रेता ः सिजिन्वति। ॐ भौमाय नमः। इति

बुध पूजनम्- ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वा मिष्टापूर्ते स ः सृजे मयञ्च। अस्मिन्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमाश्च सीदत। ॐ बुधाय नमः पाद्यादिभिः पूजयेत्।

बृहस्पति पूजनम्- ॐ बृहस्पते अति यदर्य्यो अर्हाद्युमद्विमाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽ ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। ॐ बृहस्पतये नमः इत्यावाह्य अक्षतादिभिः पूजयेत्॥

शुक्रपूजनम्- ॐ अन्नात् परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ꣳ शुक्र मन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ॐ शुक्राय नमः॥ इत्यनेनार्चयेत्॥

शनिपूजनम्- ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः। ॐ शनैश्चराय नमः॥ इति

राहु पूजनम्- ॐ कयानश्चित्रा आभूव दूती सदा बृधः सखा कयाशचिष्टया वृता॥ ॐ राहवे नमः: पाद्यादिभिरर्चयेत्॥

केतु पूजनम्- ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्य्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ ॐ केतवे नमः॥ इति॥

प्रार्थना

ॐ ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तरकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकराः भवन्तु॥
ॐ सूर्यादिनवग्रहेभ्यो नमः॥ इति पुष्पांजलिं दद्यात्॥

अथ दशादिकपाल पूजनम्

तत्रैवा (नवग्रहमण्डले) नवग्रवेद्यां पूर्वादि क्रमेण इन्द्रादिदशादिक्पालानाम् लब्धोपचारेणार्चयेत्।

मन्त्राः

पूर्वे इन्द्रमावाहेत्- ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुध्व ꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रंपुरुछूतमिन्द्र ꣳ स्वस्तिनो मधवाधात्विन्द्रः॥ ॐइन्द्राय नमः॥

आग्नये अग्निमावाहेत्- ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे देवा२ आसादयादिह॥ ॐ अग्नेय नमः॥

दक्षिणेयममावाहेत्- ॐ यमायत्वांऽगिरस्वे पितृमते स्वाहा। स्वाहा